

29 September, 2023

भारत में हरित क्रांति

संदर्भ: 28 सितंबर को प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक मनमोहन बाबु संभाषितन स्वामिनाथन का 98 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

- 1960 और 70 के दशक के दौरान भारत में कृषि पद्धतियों को बदलने में उनके महत्वपूर्ण योगदान के कारण उन्हें 'हरित क्रांति का जनक' कहा जाता है। हरित क्रांति ने खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- हालाँकि उन्होंने शुरू में सिविल सेवा परीक्षा उत्तीर्ण की थी परन्तु स्वामीनाथन की प्राथमिक रुचि कृषि में थी, जिसके कारण उन्होंने कृषि अनुसंधान में अपना करियर बनाया।
- अपने पूरे करियर के दौरान, स्वामीनाथन ने भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कृषि से संबंधित विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया, जिनमें शामिल हैं:
 - 1981 से 1985 तक खाद्य एवं कृषि संगठन परिषद के स्वतंत्र अध्यक्ष।
 - 1984 से 1990 तक प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए अंतराष्ट्रीय संघ के अध्यक्ष।
 - 1989 से 1996 तक वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर (भारत) के अध्यक्ष।
 - अन्य भूमिकाओं के साथ-साथ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के महानिदेशक।

हरित क्रांति

- **पृष्ठभूमि**
 - 1943 में, भारत ने एक गंभीर खाद्य संकट का सामना किया जिसे बंगाल अकाल के नाम से जाना जाता है, जिसके परिणामस्वरूप पूर्वी भारत में लगभग 4 मिलियन लोगों की भूख के कारण मृत्यु हो गई।
 - 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, भारत सरकार ने शुरू में कृषि भूमि के विस्तार पर ध्यान केंद्रित किया, लेकिन जनसंख्या खाद्य उत्पादन की तुलना में तेजी से बढ़ रही थी।
 - इस स्थिति के कारण खाद्य उत्पादन बढ़ाने के लिए तत्काल और कठोर उपायों की आवश्यकता पड़ी, जिससे हरित क्रांति का कार्यान्वयन हुआ।
 - भारत में हरित क्रांति ने एक ऐसे समय को चिह्नित किया जब आधुनिक तकनीकों और प्रौद्योगिकियों को अपनाने के कारण भारतीय कृषि एक औद्योगिक प्रणाली में परिवर्तित हो गई, जिसमें शामिल हैं:
 - अधिक उपज देने वाली किस्म (HYV) बीज
 - ट्रैक्टर
 - सिंचाई सुविधाएं
 - कीटनाशक
 - उर्वरक
- **क्रांति का मार्ग**
 - भारत में हरित क्रांति 1961 में शुरू हुई जब देश अकाल के खतरे का सामना कर रहा था।
 - भारतीय कृषि मंत्री के सलाहकार डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन ने हरित क्रांति की शुरुआत को चिह्नित करते हुए नॉर्मन बोरलॉग को भारत में आमंत्रित किया।
 - डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन को भारत में हरित क्रांति के जनक के रूप में मान्यता प्राप्त है।
 - प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री के नेतृत्व में, हरित क्रांति आधिकारिक तौर पर 1968 में शुरू हुई, मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया।
 - पंजाब को उसकी भरोसेमंद जल आपूर्ति के कारण नए गेहूँ के बीज के लिए प्रारंभिक परीक्षण स्थल के रूप में चुना गया था।
 - उन्नत गेहूँ के बीजों की शुरुआत से गेहूँ के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो 1967-68 और 2003-04 के बीच तीन गुना हो गई।
 - भारत ने अपना स्वयं का हरित क्रांति कार्यक्रम शुरू किया, जिसमें पौधों का प्रजनन, सिंचाई विकास और कृषि रसायनों के लिए वित्तीय सहायता शामिल थी।
 - आधुनिक कृषि पद्धतियों और प्रौद्योगिकियों, जैसे उच्च उपज वाले किस्म (HYV) के बीज, ट्रैक्टर, सिंचाई प्रणाली, कीटनाशक और उर्वरक को अपनाया गया, जिससे भारतीय कृषि एक औद्योगिक प्रणाली में बदल गई।
 - भारत ने अंतराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (आईआरआरआई) द्वारा विकसित अर्ध-बौनी चावल किस्म आईआर8 को भी अपनाया, जिससे विशिष्ट उर्वरकों और बेहतर सिंचाई के साथ चावल के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
 - 2006 तक, भारत दुनिया के सबसे सफल चावल उत्पादकों में से एक के रूप में उभरा था, जो इसकी हरित क्रांति पहल की सफलता को दर्शाता है।

ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स 2023

संदर्भ: विश्व बौद्धिक संपदा संगठन द्वारा प्रकाशित वैश्विक नवाचार सूचकांक 2023 रैंकिंग में भारत 132 अर्थव्यवस्थाओं में से 40वें स्थान पर बना हुआ है।

- ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स 2023 में भारत 132 अर्थव्यवस्थाओं में से 40वें स्थान पर है।
- भारत ने 2015 से 81 स्थानों का सुधार करते हुए जीआईआई रैंकिंग में महत्वपूर्ण प्रगति की है।
- आत्मनिर्भर भारत पहल के साथ तालमेल बिठाते हुए नवाचार को भारत के लचीलेपन के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

Face to Face Centres





DHYEYA IAS®
most trusted since 2003

DAILY pre PARE

Current affairs summary for prelims

29 September, 2023

- भारत के वैश्विक नवाचार सूचकांक (जीआईआई) सुधार में योगदान देने वाले कारकों में ज्ञान पूंजी, एक संपन्न स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र और सार्वजनिक एवं निजी अनुसंधान संगठनों का योगदान महत्वपूर्ण है।
- नीति आयोग विभिन्न क्षेत्रों में नीति-आधारित नवाचार को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से काम कर रहा है।
- वैश्विक नवाचार सूचकांक दुनिया भर की सरकारों के लिए नवाचार-संचालित सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों का आकलन करने के लिए एक मूल्यवान उपकरण के रूप में कार्य करता है।
- 29 सितंबर, 2023 को कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री और विश्व बौद्धिक संपदा संगठन की साझेदारी से नीति आयोग द्वारा वैश्विक नवाचार सूचकांक 2023 का एक “आभासी भारत लॉन्च” आयोजित किया गया था।

मुख्य निष्कर्ष:

- स्विट्जरलैंड ने लगातार 13वें वर्ष सबसे नवोन्वेषी अर्थव्यवस्था के रूप में अपना शीर्ष स्थान बनाए रखा है।
- स्वीडन, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और सिंगापुर शीर्ष नवोन्वेषी अर्थव्यवस्थाएँ हैं।
- शीर्ष 40 में मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्थाओं में मलेशिया (36वें), बुल्गारिया (38वें), तुर्किये (39वें) और भारत (40वें) शामिल हैं।
- 26 उप-सहारा अफ्रीकी अर्थव्यवस्थाओं में से नौ ने अपनी रैंकिंग में सुधार किया है, दक्षिण अफ्रीका शीर्ष 60 में प्रवेश कर रहा है, रवांडा निम्न-आय समूह में अग्रणी है, और सेनेगल और नाइजीरिया ने महत्वपूर्ण प्रगति की है।
- 2022 में, विज्ञान और नवाचार ने मिश्रित प्रदर्शन प्रदर्शित किया।
- निवेश चुनौतियों के परिणामस्वरूप नवाचार वित्तपोषण में गिरावट आई, जबकि वैज्ञानिक प्रकाशन धीमी गति से बढ़े हैं।
- सरकारी अनुसंधान एवं विकास बजट बढ़ने की उम्मीद थी, लेकिन बढ़ती मुद्रास्फीति के कारण अनिश्चितता बनी रही। इसके विपरीत, कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास खर्च में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट फाइलिंग स्थिर हो गई, और उद्यम पूंजी निवेश में तेजी से गिरावट आई है।
- मजबूत कंप्यूटिंग शक्ति और नवीकरणीय ऊर्जा और जीनोम अनुक्रमण की घटती लागत के साथ सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, गतिशीलता और ऊर्जा क्षेत्रों में प्रगति जारी रही है।
- प्रौद्योगिकी अपनाने में वृद्धि हुई, स्वच्छता, कनेक्टिविटी और इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) तक पहुंच में सुधार हुआ है।
- रोबोट इंस्टॉलेशन सहित स्वचालन में वृद्धि हुई है।
- हालाँकि, समग्र नवाचार प्रवेश दर मध्यम से निम्न बनी रही, और कई देशों में रेडियोथेरेपी के माध्यम से कैंसर के उपचार तक पहुंच अपर्याप्त थी।
- नवाचार का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव सीमित रहा।
- COVID-19 संकट ने श्रम उत्पादकता को बाधित किया।
- स्वस्थ जीवन प्रत्याशा में धीमी वृद्धि के साथ, जीवन प्रत्याशा दूसरे वर्ष गिर गई।
- 2021 की तुलना में कम विकास दर के बावजूद, कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में वृद्धि जारी रही है।

जीआईआई और इसकी गणना

- ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (जीआईआई) 2007 में शुरू किया गया था और इसे सालाना प्रकाशित किया जाता है।
- ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (जीआईआई) के लिए सहयोगी संस्थानों में व्यापार प्रशासन के लिए यूरोपीय संस्थान (Institut Européen d'Administration des Affaires-INSEAD) कॉर्नेल यूनिवर्सिटी और विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO) शामिल हैं।
- ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (जीआईआई) नवाचार का आकलन करने के लिए 80 संकेतकों पर निर्भर करता है, जिसमें शिक्षा, राजनीतिक माहौल, व्यावसायिक परिष्कार और बुनियादी ढांचे जैसे विविध पहलुओं को शामिल किया गया है।
- ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (जीआईआई) के लिए डेटा विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संघ (आईटीयू), और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) सहित वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक दोनों स्रोतों से एकत्र किया जाता है।
- ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (जीआईआई) किसी देश के नवाचार प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए सरकारों और व्यवसायों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ बिंदु के रूप में कार्य करता है।
- यह दो उप-सूचकांकों के औसत से अपने स्कोर की गणना करता है: इनोवेशन इनपुट इंडेक्स और इनोवेशन आउटपुट इंडेक्स।
- इनोवेशन इनपुट इंडेक्स पांच स्तंभों से बना है, जबकि इनोवेशन आउटपुट इंडेक्स में दो स्तंभ हैं, जिनमें से प्रत्येक नवाचार के एक विशिष्ट पहलू का वर्णन करता है। इन स्तंभों में प्रत्येक में अधिकतम पांच संकेतक हो सकते हैं, और स्कोर भारित औसत का उपयोग करके निर्धारित किए जाते हैं।

समुद्री परिवहन 2023 की समीक्षा

संदर्भ: 2023 में, अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग में एक दशक पहले की तुलना में ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन में 20% की वृद्धि देखी गई, जैसा कि समुद्री परिवहन 2023 की अंकटाड समीक्षा द्वारा रिपोर्ट किया गया है।

शिपिंग का वैश्विक प्रभाव

- शिपिंग उद्योग वैश्विक व्यापार का 80% से अधिक वहन करता है।
- यह दुनिया के कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में लगभग 3% का योगदान देता है।

Face to Face Centres

DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR: 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR: 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029



dhyeyaias.com



29 September, 2023

वैश्विक समुद्री नौवहन रुझान

- 2022 में, वैश्विक समुद्री शिपिंग मात्रा में COVID-19 आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों के कारण 0.4% की गिरावट हुई है।
- 2023 के लिए 2.4% की वृद्धि का अनुमान है।
- कंटेनरीकृत व्यापार, जिसमें 2022 में 3.7% की गिरावट आई, 2023 में 1.2% और 2024 से 2028 तक 3% बढ़ने की संभावना है।
- तेल और गैस व्यापार की मात्रा में 2022 में मजबूत वृद्धि देखी गई, जबकि भू-राजनीतिक घटनाओं के कारण टैंकर माल दुलाई दरों में मजबूत पुनरुद्धार देखा गया।

बेड़े के नवीनीकरण में चुनौतियाँ

- जनवरी 2023 तक, वाणिज्यिक जहाज औसतन 22.2 वर्ष पुराने थे।
- विश्व का आधे से अधिक बेड़ा 15 वर्ष से अधिक पुराना है।
- प्रौद्योगिकी और नियामक व्यवस्थाओं के बारे में अनिश्चितता जहाज मालिकों के लिए अपने बेड़े को नवीनीकृत करने में एक चुनौती उत्पन्न करती है।
- पोर्ट टर्मिनलों को भी निवेश निर्णयों में समान चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

वैकल्पिक ईंधन की ओर संक्रमण

- वर्तमान में, वैश्विक बेड़े का 98.8% हिस्सा भारी ईंधन तेल, हल्के ईंधन तेल और डीजल/गैस तेल जैसे पारंपरिक ईंधन का उपयोग करता है।
- केवल 1.2% वैकल्पिक ईंधन, मुख्य रूप से एलएनजी, का उपयोग करते हैं, जिसमें बैटरी/हाइड्रिड, एलपीजी और मेथनॉल का कम उपयोग होता है।
- ऑर्डर पर लगभग 21% जहाज वैकल्पिक ईंधन पर चलने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, जिनमें एलएनजी का बहुमत शामिल है।
- सक्रिय टन भार के संदर्भ में, सक्रिय बेड़े का लगभग 6% वैकल्पिक ईंधन पर चलता है।

उत्सर्जन कटौती में आईएमओ की भूमिका

- अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन (IMO) ने लगभग 2050 तक शुद्ध-शून्य GHG उत्सर्जन प्राप्त करने का लक्ष्य रखा है।
- आईएमओ की 2023 जीएचजी रणनीति का लक्ष्य 2030 तक वैकल्पिक शून्य और लगभग-शून्य जीएचजी ईंधन का उपयोग सुनिश्चित करना है, जिसका लक्ष्य 2030 तक अंतरराष्ट्रीय शिपिंग में 5% से 10% ऊर्जा का उपयोग करना है।

सतत समुद्री ईंधन की आवश्यकता

- नवीकरणीय अमोनिया और मेथनॉल ईंधन, दोहरे ईंधन इंजन वाले नए जहाजों के लिए अधिक उपयुक्त हैं।
- टिकाऊ समुद्री ईंधन को अपने पूरे जीवन चक्र में शून्य या लगभग शून्य कार्बन डाइऑक्साइड समकक्ष उत्सर्जन प्राप्त करना होगा।
- टिकाऊ समुद्री ईंधन को अपनाने के लिए आईएमओ के नेतृत्व में अंतर्राष्ट्रीय नियम आवश्यक हैं।
- आईएमओ जहाजों के लिए कार्बन तीव्रता नियमों को संशोधित कर रहा है, जिसकी समय सीमा 2026 और 2027 निर्धारित की गई है।
- अनुमान के अनुसार 2050 तक वैश्विक बेड़े को डीकार्बोनाइज करने के लिए \$8 बिलियन से \$90 बिलियन तक के वार्षिक निवेश की आवश्यकता हो सकती है।

यूएनसीटीएडी (UNCTAD)

- **स्थापना :** 1964
- **उद्देश्य :** वैश्विक अर्थव्यवस्था में विकासशील देशों के विकास-अनुकूल एकीकरण को सुविधाजनक बनाना है।
- यह एक स्थायी अंतरसरकारी संगठन है।
- **मुख्यालय :** जिनेवा, स्विट्जरलैंड
- **अंकटाड द्वारा प्रकाशित प्रमुख रिपोर्ट:**
 - व्यापार और विकास रिपोर्ट (Trade and Development Report)
 - विश्व निवेश रिपोर्ट (World Investment Report)
 - सबसे कम विकसित देशों की रिपोर्ट (The Least Developed Countries Report)
 - सूचना और अर्थव्यवस्था रिपोर्ट (Information and Economy Report)
 - प्रौद्योगिकी और नवाचार रिपोर्ट (Technology and Innovation Report)
 - वस्तुएँ और विकास रिपोर्ट (Commodities and Development Report)



29 September, 2023

NEWS IN BETWEEN THE LINES

रत्न एवं आभूषण निर्यात संवर्धन परिषद (जीजेईपीसी)



जीजेईपीसी के बारे में:

- रत्न एवं आभूषण निर्यात संवर्धन परिषद (जीजेईपीसी) भारत में रत्न एवं आभूषण उद्योग का शीर्ष निकाय है।
- यह भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा प्रायोजित (sponsored) है।
- यह अपने सदस्यों को विदेशी व्यापार, व्यापार नियम, आयात शुल्क दरें और आभूषण मेलों और प्रदर्शनियों पर अपडेट सहित बाजार की जानकारी प्रदान करता है।

मुख्यालय: मुंबई, महाराष्ट्र.

- यह कच्चे हीरे, रंगीन रत्नों और तैयार आभूषणों की आपूर्ति में सहयोग की सुविधा प्रदान करता है।

कच्चे हीरे के बारे में:

- कच्चे हीरे अपनी प्राकृतिक अवस्था में हीरे होते हैं, जो धरती से निकाले जाने के बाद अछूते रहते हैं, इससे पहले कि वे तैयार रत्न बनने के लिए काटने और पॉलिश करने से गुजरते हैं।

किम्बर्ली प्रक्रिया (KP):

- किम्बर्ली प्रोसेस (केपी) एक बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था है जिसे 2003 में विवादित हीरों के व्यापार को रोकने के लिए स्थापित किया गया था।
- इसमें किम्बर्ली प्रोसेस सर्टिफिकेशन स्कीम (KPCS) शामिल है, जो यह सुनिश्चित करती है कि कच्चे हीरे को "संघर्ष-मुक्त" ("conflict-free") के रूप में प्रमाणित किया जाए।

डेंगू रोकथाम और प्रबंधन



भारत में डेंगू का प्रकोप: भारत में डेंगू तेजी से प्रसारित हो रहा है, हाल के आंकड़ों के अनुसार 94,198 मामले और 91 मौतें हुई हैं।

तीव्र विरेमिक चरण: डेंगू के पहले तीन दिनों में लगातार बुखार, गंभीर सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द और दाने होते हैं।

लक्षण: तेज बुखार, मतली, उल्टी, दाने और दर्द।

चेतावनी के संकेत: गंभीर पेट दर्द, लगातार उल्टी, तरल पदार्थ जमा होना, रक्तस्राव और कम प्लेटलेट काउंट डेंगू के गंभीर चेतावनी संकेत हैं।

बाल चिकित्सा संबंधी विचार: माता-पिता को बच्चों में लक्षणों पर नजर रखनी चाहिए, जिनमें भूख कम लगना, पेट में दर्द, रक्तस्राव और चक्कर आना शामिल हैं।

डिस्चार्ज मानदंड: 24 घंटे तक बुखार से मुक्त रहने, भूख में सुधार, स्थिर हेमेटोग्लोबिन और प्लेटलेट काउंट बढ़ने पर मरीजों को अस्पताल से डिस्चार्ज (छुट्टी) किया जा सकता है।

निवारक उपाय: पूरी बाजू के कपड़े पहनकर, मच्छरदानी का उपयोग करके और मच्छरों के प्रजनन स्थलों को नष्ट करके डेंगू से बचा जा सकता है।

दवा संबंधी सावधानी: एंटीबायोटिक्स, स्टेरॉयड, एनएसएआईडी और इंजेक्शन से बचें, क्योंकि ये डेंगू को गंभीर बना सकते हैं।

मैनिस मिस्टीरिया



मैनिस मिस्टीरिया के बारे में:

- मैनिस मिस्टीरिया एक नई खोजी गई पैंगोलिन प्रजाति है।
- इसकी पहचान 2015 और 2019 में चीन के युन्नान प्रांत में बड़े पैमाने पर किए गए पैंगोलिन के विस्तृत अध्ययन के माध्यम से की गई थी।
- ऐसा माना जाता है कि यह नई पहचानी गई पैंगोलिन प्रजाति लगभग पाँच मिलियन वर्ष पहले अपने फिलीपीन और मलायन रिश्तेदारों से अलग हो गई थी।

पैंगोलिन के बारे में:

- पैंगोलिन स्तनधारी हैं जो सुरक्षात्मक शल्कों सहित अपनी विशिष्ट उपस्थिति के लिए जाने जाते हैं।
- उन्हें अक्सर उनके विशिष्ट शल्कों और उनके आहार के कारण "स्कैली एंटीडोर" कहा जाता है, जिसमें मुख्य रूप से चींटियाँ और दीमक शामिल होते हैं।
- पैंगोलिन का शरीर सुरक्षात्मक शल्कों से ढाका होता है, जो केराटिन से बना होता है, जो मानव बाल और नाखूनों के समान होते हैं।

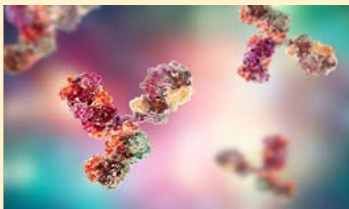
संरक्षण की स्थिति:

- "मैनिस मिस्टीरिया" सहित पैंगोलिन की सभी प्रजातियाँ अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन) की संकटग्रस्त प्रजातियों की लाल सूची में सूचीबद्ध हैं।

भारतीय पैंगोलिन स्थिति:

- भारतीय पैंगोलिन, जिसे मोटी पूंछ वाले पैंगोलिन के रूप में भी जाना जाता है, को IUCN रेड लिस्ट के तहत लुप्तप्राय के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

मोनोक्लोनल प्रतिरक्षी



मोनोक्लोनल एंटीबॉडी (Monoclonal Antibodies) के बारे में:

- मोनोक्लोनल एंटीबॉडी प्रयोगशाला में निर्मित प्रोटीन हैं जिन्हें प्रतिरक्षा प्रणाली द्वारा उत्पादित प्राकृतिक एंटीबॉडी की नकल करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- वे विशेष रूप से एंटीजन से जुड़ते हैं, जो उन्हें लक्षित करने और खत्म करने में प्रतिरक्षा प्रणाली की सहायता करते हैं।
- इन्हें पुनः संयोजक डीएनए प्रौद्योगिकी का उपयोग करके उत्पादित किया जाता है, जिससे बड़े पैमाने पर विनिर्माण संभव होता है।
- मोनोक्लोनल एंटीबॉडी के विभिन्न चिकित्सीय अनुप्रयोग हैं, जिनमें संक्रामक रोगों और कैंसर का इलाज भी शामिल है।
- नील्स के. जर्ने, जॉर्जस जे.एफ. कोहलर और सीज़र मिलस्टीन को मोनोक्लोनल एंटीबॉडी उत्पादन पर उनके कार्य के लिए 1984 में चिकित्सा में नोबेल पुरस्कार दिया गया था।

एम102.4(m102.4) के बारे में:

- यह पूरी तरह से मानव मोनोक्लोनल एंटीबॉडी है जो हेंड्रा और निपाह वायरस को प्रभावहीन करता है।
- इसने चरण-एक नैदानिक परीक्षण पास कर लिया है और अनुकंपा (compassionate) उपयोग के आधार पर इसका उपयोग किया जाता है।

Face to Face Centres



29 September, 2023

समाचारों में स्थान

मालदीव

हाल ही में, मालदीव में 9 सितंबर को पहले दौर का राष्ट्रपति चुनाव हुआ, जहां कोई भी उम्मीदवार 50% से अधिक वोट हासिल करने में सफल नहीं हो सका।

राजधानी: माले

भौगोलिक अवस्थिति:

- मालदीव हिंद महासागर में, श्रीलंका और भारत के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।
- इसमें लगभग 1,200 द्वीप शामिल हैं, जिनमें से अधिकांश निर्जन हैं।

भौगोलिक विशेषतायें:

मूंगा एटोल:

- मालदीव की विशेषता 26 मूंगा एटोल की श्रृंखला है, जिनमें से प्रत्येक में कई मूंगा द्वीप शामिल हैं।
- ये एटोल लैगून को घेरने वाली अंगूठी के आकार की मूंगा चट्टानें हैं।

मूंगा चट्टानें: मालदीव अपनी विस्तृत मूंगा चट्टानों के लिए प्रसिद्ध है, जो रंगीन मूंगों, मछली प्रजातियों और अन्य जलीय जीवों सहित विविध समुद्री जीवन की मेजबानी करता है।

उच्चतम बिंदु: उच्चतम प्राकृतिक बिंदु समुद्र तल से लगभग 2.4 मीटर (7 फीट 10 इंच) ऊपर है, जबकि कुछ स्रोतों में माउंट विलिंगिली का उल्लेख 5.1 मीटर (17 फीट) बताया गया है।

राजनीतिक इतिहास: 2008 में लंबे समय तक राष्ट्रपति रहे मौमून अब्दुल गयूम की चुनावी हार के बाद से मालदीव ने राजनीतिक अस्थिरता का सामना किया है।



समाचार में व्यक्तित्व

एम. एस. स्वामीनाथन

➤ मनकोम्बु संबासिवन स्वामीनाथन (7 अगस्त 1925 - 28 सितंबर 2023)

➤ उनका जन्म कुंभकोणम, मद्रास प्रेसीडेंसी (अब तमिलनाडु, भारत में) में हुआ था।

➤ एम.एस. स्वामीनाथन को "भारत की हरित क्रांति का जनक" कहा जाता है।

योगदान:

- स्वामीनाथन ने, नॉर्मन बोरलॉग के साथ, 1960 के दशक के दौरान भारत में हरित क्रांति शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- केंद्रीय योजना आयोग में सदस्य (कृषि, ग्रामीण विकास, विज्ञान और शिक्षा) के रूप में नियुक्त किया गया था।
- इन्होंने 1982 से 1988 तक फिलीपींस में अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (आईआरआरआई) का नेतृत्व किया था।
- 1988 में एम.एस. स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन (MSSRF) की स्थापना की थी।
- राष्ट्रीय किसान आयोग (स्वामीनाथन आयोग) का नेतृत्व किया, जिसने उत्पादन लागत से 50% अधिक न्यूनतम समर्थन मूल्य की सिफारिश की।

पुरस्कार और सम्मान:

- 1967 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया।
- 1971 में सामुदायिक नेतृत्व के लिए रेमन मैग्सेसे पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- जनवरी 1972 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया।
- 1987 में विश्व खाद्य पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया।
- 2018 में विश्व कृषि पुरस्कार के प्रथम प्राप्तकर्ता।
- अल्बर्ट आइंस्टीन विश्व विज्ञान पुरस्कार (1986)

POINTS TO PONDER

- ❖ 2005 में राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू बुश द्वारा नामित संयुक्त राज्य अमेरिका के मुख्य न्यायाधीश कौन बने? - जॉन जी रॉबर्ट्स जूनियर।
- ❖ कौन सा सागर उन दोनों देशों को अलग करता है जिन्होंने तनावपूर्ण संबंधों के बावजूद 1972 में राजनयिक संबंध स्थापित किए थे? - अरब सागर, भारत और पाकिस्तान
- ❖ 1962 में शुरू हुए तारामंडल की स्थापना के पीछे कलकत्ता के किस उद्योगपति की भूमिका थी जिसका नाम उनके नाम पर रखा गया था? - घनश्याम दास बिड़ला
- ❖ "दिल का इस्तेमाल करें, दिल को जानें" ("Use Heart, Know Heart") से पहले पिछले साल विश्व हृदय दिवस की थीम क्या थी? - "हृदय रोग को मात देने के लिए हृदय का प्रयोग करें" ("Use Heart to Beat Cardiovascular Disease")
- ❖ आज ही के दिन (29 सितंबर, 1959) इंग्लिश चैनल को सफलतापूर्वक तैरकर पार करने वाली पहली एशियाई महिला कौन थी? - आरती साहा

Face to Face Centres

